

रविवार 24 फरवरी, 2019

विषय — मन

स्वर्ण पाठ: भजन संहिता 32: 8

---

“मैं तुझे बुद्धि दूंगा, और जिस मार्ग में तुझे चलना होगा उस में तेरी अगुवाई करूंगा; मैं तुझ पर कृपा दृष्टि रखूंगा और सम्मति दिया करूंगा।”

---

उत्तरदायी अध्ययन: यशायाह 35: 3-8, 10

3. ढीले हाथों को दृढ़ करो और थरथराते हुए घुटनों को स्थिर करो ।
4. घबराने वालों से कहो, हियाव बान्धो, मत डरो! देखो, तुम्हारा परमेश्वर पलटा लेने और प्रतिफल देने को आ रहा है । हां, परमेश्वर आकर तुम्हारा उद्धार करेगा ॥
5. तब अन्धों की आंखे खोली जाएंगी और बहिरों के कान भी खोले जाएंगे;
6. तब लंगड़ा हरिण की सी चौकड़ियां भरेगा और गूंगे अपनी जीभ से जयजयकार करेंगे । क्योंकि जंगल में जल के सोते फूट निकलेंगे और मरुभूमि में नदियां बहने लगेंगी
7. मृगतृष्णा ताल बन जाएगी और सूखी भूमि में सोते फूटेंगे; और जिस स्थान में सियार बैठा करते हैं उस में घास और नरकट और सरकण्डे होंगे ॥
8. और वहां एक सड़क अर्थात् राजमार्ग होगा, उसका नाम पवित्र मार्ग होगा; कोई अशुद्ध जन उस पर से न चलने पाएगा; वह तो उन्हीं के लिये रहेगा और उस मार्ग पर जो चलेंगे वह चाहे मूर्ख भी हों तौभी कभी न भटकेंगे ।
10. और यहोवा के छुड़ाए हुए लोग लौटकर जयजयकार करते हुए सिन्धोन में आएंगे; और उनके सिर पर सदा का आनन्द होगा; वे हर्ष और आनन्द पाएंगे और शोक और लम्बी सांस का लेना जाता रहेगा ॥

## पाठ उपदेश

### बाइबल

#### 1. नीतिवचन 2: 1-8

- 1 हे मेरे पुत्र, यदि तू मेरे वचन ग्रहण करे, और मेरी आज्ञाओं को अपने हृदय में रख छोड़े,  
2 और बुद्धि की बात ध्यान से सुने, और समझ की बात मन लगा कर सोचे;  
3 और प्रवीणता और समझ के लिये अति यत्न से पुकारे,  
4 ओर उस को चान्दी की नाईं ढूँढ़े, और गुप्त धन के समान उसी खोज में लगा रहे;  
5 तो तू यहोवा के भय को समझेगा, और परमेश्वर का ज्ञान तुझे प्राप्त होगा।  
6 क्योंकि बुद्धि यहोवा ही देता है; ज्ञान और समझ की बातें उसी के मुँह से निकलती हैं।  
7 वह सीधे लोगों के लिये खरी बुद्धि रख छोड़ता है; जो खराई से चलते हैं, उनके लिये वह  
ढाल ठहरता है।  
8 वह न्याय के पथों की देख भाल करता, और अपने भक्तों के मार्ग की रक्षा करता है।

#### 2. I राजा 3: 6-12

- 6 सुलैमान ने कहा, तू अपने दास मेरे पिता दाऊद पर बड़ी करुणा करता रहा, क्योंकि वह अपने को तेरे सम्मुख  
जानकर तेरे साथ सच्चाई और धर्म और मन की सीधे से चलता रहा; और तू ने यहां तक उस पर करुणा की  
थी कि उसे उसकी गद्दी पर बिराजने वाला एक पुत्र दिया है, जैसा कि आज वर्तमान है।  
7 और अब हे मेरे परमेश्वर यहोवा! तूने अपने दास को मेरे पिता दाऊद के स्थान पर राजा किया है, परन्तु मैं छोटा  
लड़का सा हूँ जो भीतर बाहर आना जाना नहीं जानता।  
8 फिर तेरा दास तेरी चुनी हुई प्रजा के बहुत से लोगों के मध्य में है, जिनकी गिनती बहुतायत के मारे नहीं हो  
सकती।  
9 तू अपने दास को अपनी प्रजा का न्याय करने के लिये समझने की ऐसी शक्ति दे, कि मैं भले बुरे को परख  
सकूँ; क्योंकि कौन ऐसा है कि तेरी इतनी बड़ी प्रजा का न्याय कर सके?  
10 इस बात से प्रभु प्रसन्न हुआ, कि सुलैमान ने ऐसा वरदान मांगा है।  
11 तब परमेश्वर ने उस से कहा, इसलिये कि तू ने यह वरदान मांगा है, और न तो दीर्घायु और न धन और न अपने  
शतरुओं का नाश मांगा है, परन्तु समझने के विवेक का वरदान मांगा है इसलिये सुन,  
12 मैं तेरे वचन के अनुसार करता हूँ, तुझे बुद्धि और विवेक से भरा मन देता हूँ, यहां तक कि तेरे समान न तो तुझ से  
पहिले कोई कभी हुआ, और न बाद में कोई कभी होगा।

#### 3. I राजा 4: 29-31 (सं:), 32, 34

- 29 और परमेश्वर ने सुलैमान को बुद्धि दी, और उसकी समझ बहुत ही बढ़ाई, और उसके हृदय में समुद्र तट की  
बालू के किनकों के तुल्य अनगिनित गुण दिए।

30 और सुलैमान की बुद्धि पूर्व देश के सब निवासियों और मिस्रियों की भी बुद्धि से बढ़कर बुद्धि थी ।  
31 वह तो और सब मनुष्यों से भी अधिक बुद्धिमान था:  
32 उसने तीन हज़ार नीतिवचन कहे, और उसके एक हज़ार पांच गीत भी है ।  
34 और देश देश के लोग पृथ्वी के सब राजाओं की ओर से जिन्होंने सुलैमान की बुद्धि की कीर्ति सुनी थी, उसकी बुद्धि की बातें सुनने को आया करते थे ।

#### 4. अय्यूब 36: 3-5, 7, 10, 11

3 मैं अपने ज्ञान की बात दूर से ले आऊंगा, और अपने सिरजनहार को धर्मी ठहराऊंगा ।  
4 निश्चय मेरी बातें झूठी न होंगी, वह जो तेरे संग है वह पूरा ज्ञानी है ।  
5 देख, ईश्वर सामर्थी है, और किसी को तुच्छ नहीं जानता; वह समझने की शक्ति में समर्थ है ।  
7 वह धर्मियों से अपनी आंखें नहीं फेरता, वरन उन को राजाओं के संग सदा के लिये सिंहासन पर बैठाता है, और वे ऊंचे पद को प्राप्त करते हैं ।  
10 वह उनके कान शिक्षा सुनने के लिये खोलता है, और आज्ञा देता है कि वे बुराई से परे रहें ।  
11 यदि वे सुन कर उसकी सेवा करें, तो वे अपने दिन कल्याण से, और अपने वर्ष सुख से पूरे करते हैं ।

#### 5. मत्ती 13: 1, 2 (सं), 3 (सं १), 10, 11, 13, 15, 16

1 उसी दिन यीशु घर से निकलकर झील के किनारे जा बैठा ।  
2 और उसके पास ऐसी बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई कि वह नाव पर चढ़ गया, और सारी भीड़ किनारे पर खड़ी रही ।  
3 और उस ने उन से दृष्टान्तों में बहुत सी बातें कही, कि देखो, एक बोने वाला बीज बोने निकला ।  
10 और चेलों ने पास आकर उस से कहा, तू उन से दृष्टान्तों में क्यों बातें करता है?  
11 उस ने उत्तर दिया, कि तुम को स्वर्ग के राज्य के भेदों की समझ दी गई है, पर उन को नहीं ।  
13 मैं उन से दृष्टान्तों में इसलिये बातें करता हूँ, कि वे देखते हुए नहीं देखते; और सुनते हुए नहीं सुनते; और नहीं समझते ।  
15 क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया है, और वे कानों से ऊंचा सुनते हैं और उन्होंने अपनी आंखें मूंद लीं हैं; कहीं ऐसा न हो कि वे आंखों से देखें, और कानों से सुनें और मन से समझें, और फिर जाएं, और मैं उन्हें चंगा करूं ।  
16 पर धन्य है तुम्हारी आंखें, कि वे देखती हैं; और तुम्हारे कान, कि वे सुनते हैं ।

#### 6. मरकुस 7: 32-35

32 और लोगों ने एक बहिरे को जो हक्ला भी था, उसके पास लाकर उस से बिनती की, कि अपना हाथ उस पर रखे ।  
33 तब वह उस को भीड़ से अलग ले गया, और अपनी उंगलियां उसके कानों में डालीं, और थूक कर उस की जीभ को छूआ ।  
34 और स्वर्ग की ओर देखकर आह भरी, और उस से कहा; इप्फत्तह, अर्थात् खुल जा ।  
35 और उसके कान खुल गए, और उस की जीभ की गांठ भी खुल गई, और वह साफ साफ बोलने लगा ।

#### 7. यशायाह 29: 17-19, 24

- 17 क्या अब थोड़े ही दिनों के बीतने पर लबानोन फिर फलदाई बारी न बन जाएगा, और फलदाई बारी जंगल न गिनी जाएगी?
- 18 उस समय बहिरे पुस्तक की बातें सुनने लेंगे, और अन्धे जिन्हें अब कुछ नहीं सूझता, वे देखने लेंगे।
- 19 नम्र लोग यहोवा के कारण फिर आनन्दित होंगे, और दरिद्र मनुष्य इस्राएल के पवित्र के कारण मगन होंगे।
- 24 उस समय जिनका मन भटका हो वे बुद्धि प्राप्त करेंगे, और जो कुड़कुड़ाते हैं वह शिक्षा ग्रहण करेंगे॥

## विज्ञान और स्वास्थ्य

### 1. 275: 6-9, 20-24

दिव्य विज्ञान का प्रारंभिक बिंदु यह है कि भगवान, आत्मा, संपूर्ण है और न ही कोई अन्य शक्ति है और न ही मन — वह ईश्वर प्रेम है, और इसलिए वह दिव्य सिद्धांत है।

दिव्य तत्वमीमांसा, जैसा कि आध्यात्मिक समझ से पता चलता है, स्पष्ट रूप से दिखाता है कि सब माइंड है और वह मन ईश्वर है, सर्व-शक्ति, सर्व-भूत, सर्व-ज्ञानी, — अर्थात् सभी शक्ति, सभी उपस्थिति, सभी विज्ञान। इसलिए सभी वास्तव में माइंड की अभिव्यक्ति है।

### 2. 591: 16-20

मन। केवल मैं, या हम; एकमात्र आत्मा, जीवन, दिव्य सिद्धांत, पदार्थ, जीवन, सत्य, प्रेम; एक ईश्वर; वह नहीं जो मनुष्य में है, लेकिन ईश्वरीय सिद्धांत या ईश्वर, किसका मनुष्य पूर्ण और परिपूर्ण अभिव्यक्ति है; देवता, जो रेखांकित करते हैं, लेकिन रेखांकित नहीं किए जाते हैं।

### 3. 488: 23-31

अकेले मन के पास सभी संकायों, धारणा और समझ है। इसलिए मानसिक बंदोबस्ती संगठन और विघटन की दया पर नहीं हैं — अन्यथा बहुत कीड़े मनुष्य को नष्ट कर सकते थे। यदि मनुष्य की वास्तविक इंदिरियों के घायल होना संभव होता, आत्मा उन्हें अपनी संपूर्णता में पुनः उत्पन्न कर सकती है; लेकिन उन्हें छेड़ा नहीं जा सकता और न ही नष्ट किया जा सकता है, चूंकि वे अमर मन में विद्यमान हैं, पदार्थ में नहीं।

### 4. 586: 3-6

आंखें। आध्यात्मिक विवेक, - भौतिक नहीं बल्कि मानसिक।  
बाहरी दृष्टि के बारे में सोचकर यीशु ने कहा, "क्या आंखे रखते हुए भी नहीं देखते?" (मरकुस 8:18.)

### 5. 585: 1-4

कान। तथाकथित कॉर्पोरल इंदिरियों के अंग नहीं, लेकिन आध्यात्मिक समझ के लिए।  
यीशु ने आध्यात्मिक धारणा का जिक्र करते हुए कहा, "और कान रखते हुए भी नहीं सुनते?" (मरकुस 8:18.)

### 6. 486: 23-2

दृष्टि, श्रवण, मनुष्य की सभी आध्यात्मिक इंद्रियां शाश्वत हैं। वे खो नहीं सकते। उनकी वास्तविकता और अमरता आत्मा और समझ में है, पदार्थ में नहीं, — इसलिए उनकी स्थायित्व। यदि ऐसा नहीं होता, तो मनुष्य का तेजी से विनाश हो जाता। यदि पाँच कॉरपोरल सेंस मीडियम थे जिसके माध्यम से ईश्वर को समझना है, तब पक्षाघात, अंधापन और बहरापन मनुष्य को भयानक स्थिति में डाल देगा, वह उन जैसा कहां होगा "कोई उम्मीद नहीं है, और दुनिया में भगवान के बिना;" लेकिन वास्तव में, ये विपत्तियाँ अक्सर सुख और अस्तित्व की उच्च भावना को पाने के लिए नश्वर ड्राइव करती हैं।

## 7. 393: 25-28

जब यीशु ने घोषणा की कि "शरीर का दिया आंख है", निश्चित रूप से इसका मतलब है कि प्रकाश मन पर निर्भर करता है, दृश्य जीवों का गठन जटिल हास्य, लेंस, मांसपेशियों, परितारिका और पुतली पर नहीं।

## 8. 284: 28-6

क्रायश्चियन साइंस के अनुसार, मनुष्य की एकमात्र वास्तविक इंद्रियाँ आध्यात्मिक हैं, जो दिव्य मन से निकल रहे हैं। विचार ईश्वर से मनुष्य की ओर जाते हैं, लेकिन न तो संवेदना और न ही रिपोर्ट भौतिक शरीर से मन तक जाती है। अंतर्मन हमेशा ईश्वर से लेकर उसके विचार, मनुष्य तक होता है। द्रव्य भावुक नहीं होता है और यह अच्छे या बुरे, आनंद या पीड़ा का संज्ञान नहीं हो सकता है। मनुष्य की वैयक्तिकता भौतिक नहीं है। अंत ही नहीं, जिसे पुरुष स्वर्ग कहते हैं लेकिन यहां और अभी, प्राप्त होने का यह साइंस समय और अनंत काल के लिए होने का महान तथ्य है।

## 9. 285: 11-14, 17-22, 27-31

दावे की असत्यता कि एक नश्वर भगवान की सच्ची छवि है आत्मा और पदार्थ, मन और शरीर के विपरीत संकेत द्वारा सचित्र है, क्योंकि एक बुद्धि है, जबकि दूसरा गैर-बुद्धि है।

बुद्धि के एक दिव्य ज्ञान और उसकी अभिव्यक्तियों को स्थान देने के लिए माइंड की सीट के रूप में अनंत और एक भौतिक शरीर की एक निश्चित गर्भाधान का समय आ गया है: — विज्ञान की सर्वोच्च समझ, या दिव्य सिद्धांत, और विचार के बारे में बेहतर समझ।

क्राइस्टियन साइंस के साइंस के माध्यम से, नश्वर लोगों तक पहुँचते हैं, एक उच्च भावना, वे किसी वस्तु से नहीं, बल्कि ईश्वरीय सिद्धांत, ईश्वर से सीखना चाहेंगे, कि मसीह, सत्य, को उपचार और शक्ति के रूप में कैसे प्रदर्शित किया जाए।

## 10. 84: 11-23

भूत, वर्तमान और भविष्य को जानना, वर्तमान, दिव्य मन का विचार है, और इस विचार का जो इस मन के साथ तालमेल है,

साइंस के साथ परिचित होना हमें बड़े पैमाने पर दिव्य मन के साथ कम्यून को सक्षम बनाता है, सर्वकल्याण की चिंता करने वाली घटनाओं का पूर्वाभास और पूर्वाभास, दैवीय रूप से प्रेरित करने के लिए, — हाँ, भ्रूणहीन मन की सीमा तक पहुँचने के लिए।

यह समझना कि माइंड असीम है, कॉरपोरलिटी से घिरा नहीं है, ध्वनि या दृष्टि के लिए कान और आंख पर निर्भर नहीं है और न ही यह मांसपेशियों और हड्डियों पर निर्भर करता है, माइंड-साइंस की ओर एक कदम है जिसके द्वारा हम मनुष्य के स्वभाव और अस्तित्व की व्याख्या करते हैं

## 11. 467: 9-16

यह अच्छी तरह समझा जाना चाहिए कि सभी पुरुषों का एक मन, एक ईश्वर और पिता, एक जीवन, सत्य और प्रेम होता है। यह तथ्य स्पष्ट होते ही मानव जाति अनुपात में परिपूर्ण हो जाएगी, युद्ध बंद हो जाएगा और मनुष्य का सच्चा भाईचारा स्थापित हो जाएगा। कोई अन्य देवता नहीं, कोई दूसरा नहीं, बल्कि एक ही मार्गदर्शक का मन, मनुष्य ईश्वर की समानता है, शुद्ध और शाश्वत है, और उसके पास वह मन है जो मसीह में भी था।

## 12. 470: 21-28, 32-5

ईश्वर मनुष्य का निर्माता है, और, मनुष्य का ईश्वरीय सिद्धांत शेष पूर्ण है, दिव्य विचार या प्रतिबिंब, मनुष्य, परिपूर्ण रहता है मनुष्य ईश्वर के अस्तित्व की अभिव्यक्ति है। अगर कभी ऐसा क्षण आया जब मनुष्य ने ईश्वरीय पूर्णता को व्यक्त नहीं किया, तब एक ऐसा क्षण आया जब मनुष्य ने ईश्वर को व्यक्त नहीं किया, और फलस्वरूप एक समय था जब देवता अप्रसन्न थे — यह इकाई के बिना है।

**साइंस में ईश्वर और मनुष्य के संबंध, ईश्वरीय सिद्धांत और विचार अविनाशी हैं;** और विज्ञान जानता है कि कोई चूक नहीं हुई है और न ही सद्भाव में लौटा लेकिन यह ईश्वरीय आदेश या आध्यात्मिक कानून रखता है, जिसमें भगवान और वह जो कुछ भी बनाता है वह परिपूर्ण और शाश्वत है, अपने सनातन इतिहास में अपरिवर्तित रहा है।

## 13. 487: 6-12

भौतिक रूप से आध्यात्मिक रूप से देखने और सुनने में अधिक ईसाइयत है। उनके नुकसान की तुलना में माइंड-संकायों के सतत अभ्यास में अधिक विज्ञान है। खोया वे नहीं हो सकता है, जबकि मन रहता है। इस की आशंका ने अंधे को दृष्टि दी और सदियों पहले बहरे को सुना, और यह आश्चर्य को दोहराएगा।

## दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

## दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

## उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक किरिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वानी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

## कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6